

23

- 23

  - (7) अवयव - अनुमान के अंगीकृत वाक्यों की मूल्य-प्रक्रिया है। यह अवयव है Ex - प्रतिज्ञा, हेतु, उद्धारणा, उपनय एवं निगमन आदि।
  - (8) तर्क - वह युक्ति का एकरूप है जिसमें किसी सिद्धांत को सिद्ध करने के लिए उसके विरोधी सिद्धांत में दोष दिखाया जाता है।
  - (9) निर्णय - पक्ष विपक्ष के वक्तव्यों पर निष्पक्ष भाव से विचार करने के पश्चात् किसी वस्तु के विषय में निश्चयात्मक धारणा बनाना निर्णय है।
  - (10) वाद - वह विचार जिसके द्वारा यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने के लिए वादी एवं प्रतिवादी एक दूसरे के विचारों का खण्डन करते अपने सिद्धांत की पुष्टि करते हैं।
  - (11) जल्प - जब वादी एवं प्रतिवादी केवल अपने विरोधी को पराजित करने के लिए वाद-विवाद करते हैं, तब उसे जल्प कहते हैं। इसका उद्देश्य यथार्थ ज्ञान प्राप्त करना नहीं होता।
  - (12) वितण्डा - वह है जिसमें केवल अपने विरोधी को पराजित करने के लिए वाद-विवाद किया जाता है। यह अपने जीतने के उद्देश्य से भी नहीं किया जाता। इसका एकमात्र उद्देश्य अपने विरोधी के विचारों का खण्डन करना होता है।
  - (13) हेतुभास - यह अनुमान का दोष है जो अयार्थहेतु के कारण उत्पन्न होता है।
  - (14) दल - वक्तव्य के वक्तव्य का विपरीत या भिन्न अभिप्राय मानकर अर्थ की अनर्थ में परिवर्तित कर देना दल है। Ex - रमेश के पास नव कुंवरा है - इसमें नव का अर्थ नौ एवं नया भी हो सकता है। विवादी अपने मतलब के लिए अर्थ बदल सकता है।
  - (15) जाति - मिथ्या उक्त जो सादृश्य एवं असदृश्य के आधार पर दिया जाता है।

Monday

25

Ex- शब्द नित्य है या अनित्य (प्रश्न)

उत्तर- शब्द नित्य है, क्योंकि वह नित्य आकाश समान अमूर्त है। यह उत्तर जाति है, क्योंकि अमूर्त होना नित्यता का कोई लक्षण नहीं है। सुख दुःखादि अमूर्त होकर भी अनित्य हैं।

(16) निग्रहस्थान - वाद-विवाद का वह स्थान, जहाँ विरोधि-  
की हार स्वीकार करनी पड़ती है - निग्रहस्थान है।  
पक्ष और विपक्ष का निर्णायक मह्यस्थ, जहाँ तर्क-नियमों  
का उल्लंघन देखता है, वह निग्रह निर्णायक सुनाता है।

वस प्रकारा 6 पदार्थ निरूपण तत्त्वज्ञान के लिए संपादित करते हैं, जिसका उद्देश्य दुःखनिवृत्ति है।